IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

# सांख्यदर्शन में प्रकृति का स्वरूप

**मनीष प्रसाद गौतम[1], डॉ. बृजेश नाथ ओझा[2]**

शोधार्थी (संस्कृत), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष–संस्कृत, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव, जिला–रीवा (म.प्र.)[2]

**शोध–सारांशः** प्रकृति के सन्दर्भ में प्रयुक्त 'अव्यक्त' शब्द विशेष विचारणीय है। डॉ. दासगुप्त ने 'अव्यक्त' पद को त्रिधा विभक्त किया है[1] इन्होंने नपुंसकलिंग में प्रयुक्त 'अव्यक्त' को प्रकृति के अर्थ में माना है। इसी संदर्भ में डॉ. रामसुरेश पाण्डेय के अनुसार–प्रकृति एवं पुरुष इस प्रकार के लिंग के विभाजन का अतिक्रमण करते है। यह विभाग संसार की विकसित स्थिति में ही सम्भव है। जगदादि के रूप में अभ्युपगत प्रकृति एवं पुरुष प्रायः नपुंसक लिंग में प्रयुक्त हुआ है। पुराण तथा महाभारत एवं अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी प्रकृति एवं पुरुष को 'स्त्री पुम्भ्यां व्यतिरिक्त' कहा गया है। प्रकृति एवं पुरुष निर्विवादतः अव्यक्त हैं। पुरुष केवल प्रत्यक्षगम्य रूप से न होने के कारण 'अव्यक्त' हैं। प्रकृति कारण और प्रत्यक्षातिप होने के कारण 'अव्यक्त' है। कार्यों की व्यक्त और अव्यक्त द्विविध अवस्था मानी गयी है। इनकी परमाव्यक्त अवस्था ही प्रकृति है। उपयुक्त बिन्दुओं को शोध पत्र में शामिल करने का प्रयास किया गया है।

**मुख्य शब्दः** सांख्यदर्शन, प्रकृति, स्वरूप,अव्यक्त, महाभारत, पुराण, एकाणर्व, गुणसाम्य, तमः, अक्षर, अजा, अव्यक्त, त्रिगुण, सत्व, प्रसवधर्मिणी, अचेतन, अलिंग इत्यादि।

**संदर्भ स्रोतः**

**[1].** पुल्लिंग में प्रयुक्त, नपुंसक लिंग में प्रयुक्त, समस्तपद में प्रयुक्त। डॉ. भारतीय दर्शन।

**[2].** (गी. 3/28)

**[3].** (गी. 3/33)

**[4].** 'प्रकृति इति उच्यते विकारोत्पादकत्वात्, अविद्या ज्ञानविरोधित्वात्, माया विचित्रसृष्टिकारत्वात्।'

**[5].** प्रकृष्ट ववाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टि वाचकः।

**[6].** सृष्टौ प्रकृष्टा या देवी प्रकृति; सा प्रकीर्तिता।। –देवीभगवत्।

**[7].** विज्ञानभिक्षुः सांख्यप्रवचनभाष्य।

**[8].** कर्मणोपि न वस्तुसिद्धं निर्मित्तकारणस्य कर्मणों न मूलकारणत्वम्। –विज्ञानभिक्षु –सां. प्र. भात्र (1/81)।

**[9].** अत्र कर्मशब्दोऽविद्यादीनामप्युपलक्षकौ गुणत्वाविशेषेण तेषामप्युपादनत्वायोगात्। –सां.प्र.भ., 1/81।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

**[10].** कार्यदर्शनात्तदुपलब्धेः। – सो.सू., 1/110।

**[11].** कार्यात् कारणानुमानं तत्साहित्यात्। –सां.सू., 1/135।

**[12].** बृजमोहन चतुर्वेदी, –सां.का. 11, पृ. 132।

**[13].** सत्वादीनामतद्धर्मर्मत्वं तद्रूपत्वात्। – सां.सू. 6/38।

**[14].** सुखधर्मकं सत्त्वम्, दुःखधर्मकं रजः, मोहधर्मकं तमः। –सां.सू.।

**[15].** इच्छाद्वेषप्रयत्नसुख दुःखज्ञानान्यात्मनोलिंगमिति। –न्यायसूत्र, 1/1/110।

**[16].** मूलप्रकृतिरविकृति– 0।।3।। –सां.का.।

**[17].** Pasitive Science of ancient Hindus. -p.p. 7-8. Dr. B.N.Seal.

**[18].** अकार्यावस्थोपलक्षितं गुणसाम्यं प्रकृतिः।

**[19].** सा च साम्यावस्थयौपलितं सत्त्वादित्रयम्। – सां.प्र.भा. 1/61।

**[20].** कार्यावस्था में गुणसाम्य नहीं रहता, अकार्यावस्था ही गुणसाम्य की अवस्था है।

**[21].** महदादिकतन्तु कार्यैसत्वादिकं न कदाप्यकार्यावस्थ भवतीति तद्व्यावृत्तिः। वैषम्यावस्थायामति प्रकृतितत्त्वसिद्धये उपलक्षितम्। –सां.सा.पूर्वभावा तृ.परि., पृ. 304।

**[22].** सर्वोपकारिणी, 1–3।

**[23].** सांख्यकारिका : तत्त्वकौमुदी : व्याख्याकार गजाननशास्त्री मुलगांवकर।

**[24].** अजामेकां लोहितकृष्ण शुक्लां–0। –श्वेताश्वतरोपनिषद्।

**[25].** मूलेमूलाभावादभूलम्। –सां. 1/67।

**[26].** मूलक्षतिकरीमारनवस्थां हि दूषणम् – उदयनाचार्य।

**[27].** मूलप्रकृति ––––– पुरुषः।।3।। – सां.का. ईश्वरकृष्ण।